Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=215
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JUNE-JULY 2023, VOL-11/58
https://doi.org/10.5281/zenodo.8245663

भारत में मलिन बस्तियों का भौगोलिक विश्लेशण

डॉ0 रमन प्रकाश

असि0प्रो0–भूगोल विभाग भारतीय महाविद्यालय,फर्रूखाबाद

Paper Received On 20 June 2023

Peer Reviewed On 22 July 2023

Published On: 1 August 2023

Abstract

भारत विश्व के सबसे विशालतम देशों में से एक है। जहां एक तरफ उत्तर में हिमालयी क्षेत्र में अत्यधिक बर्फबारी होती है। वहीं मैदानी इलाकों में तापमान काफी गर्म होता है। जबकि समुद्री इलाकों में तापमान काफी हद तक एक समान रहता है। एक देश के अन्दर इतनी सारी अलग – अलग जलवायु विविधता अपने आप में अदभुत हैं। जहाँ तक भारत जैसे विकासशील देश का प्रश्न है , गंदी बस्ती की समस्या यहां अत्यधिक गंभीर है। लोगों की आर्थिक स्थिति का ठीक न होना, बढ़ती जनसंख्या एवं तकनीकि व औद्योगीकरण के कारण ही मलिन बस्तियां अस्तित्व में आयी। इस प्रकार गन्दी बस्तियाँ प्रायः सभी बड़े नगरों में विकसित हुई हैं। करोड़ों व्यक्तियों के जीवन स्तर में सुधार का प्रमुख कारण नगरीकरण और औद्योगीकरण ही है लेकिन इस विकास का नकारात्मक प्रभाव मलिन बस्तियों के उद्भव के रूप में सामने आया। एक छोटी – सी झोपड़ी , कच्चे मकान अथवा एक कोठरी में 10 से 15 व्यक्ति तक रहते हैं। जल निकासी का कोई प्रबंध नहीं होता। कूड़े ,कचरे का यहां ढेर लगा रहता है। शौच की कोई व्यवस्था नहीं होती। बैठने के लिए इनके पास खुला स्थान नहीं है। तंग संकरी मलिन बस्तियाँ जहां जीवन कम और बीमारियां अधिक हैं। ये वे स्थान हैं जहां सामाजिक आदर्श , मुल्य , नैतिकता ,सहिष्णुता आदि के दर्शन होते हैं। ये स्थान सभी प्रकार की बुराइयों से ग्रसित होते हैं। अतः उपरोक्त वि लेशण में भारत की मलिन बस्तियों की प्रमुख समस्याओं , दुष्परिणाम , समाधान के उपायों एवं स्वच्छ बेहतर जीवन स्तर के उपायों का अध्ययन किया गया है।

सार शब्द – *औद्योगीकरण, मलिन बस्ती, नगरीय आवास, जनसँख्या दबाव , औद्योगिक क्रांति , शिक्षा एवं जागरूकता ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

मानव की आधारभूत जरूरतों में रोटी, कपड़ा और मकान प्रमुख हैं, जिनके आभव में में जीवन स्तर नारकीय हो जाता है। वर्तमान औद्यौगीकरण व म ीनीकरण के युग में मानवीय क्षमता को कमतर आंका जाता है अर्थात् मानव श्रम को म ीनों द्वारा स्थानापन्न किया जा रहा है। किन्तु इसकादुश्परिणाम रोजगाररहित जनसंख्या के स्वास्थ्य, ि ाक्षा, आवास की समस्या के रूप में सामने आ रहा है। प्रगति के इस दौर में आज श्रमिकों के

लिए आवास की व्यावस्था न होने के कारण अधिकां ा श्रमिक नारकीय जीवन जीने के लिए विव ा हैं। यही कारण है कि नगरों को ही इन समस्याओं का केंद्र माना जाता है।

वि व के अधिकां ा दे ाों में मलिन बस्तियों का अस्तित्व पाया जाता है। विकसित दे ाों जैसे–सोवियत रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका आदि में भी औद्योगिक व तकनीकि प्रगति के बावजूद स्वस्थ जीवन और आवास की समस्या आज भी है। 20वीं भाताब्दी को विज्ञान का युग माना जाता है। विभिन्न क्षेत्रों ि ाक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, उद्योग में आ ाातीत प्रगति हुई । पिछली भाताब्दी में वि व के साथ–साथ भारत की जनसंख्या में तीव्र बृद्धि हुई। रोजगार व ि ाक्षा हेतु ग्रामीण जनसंख्या का नगरों की ओर बड़ी संख्या में प्रवास हुआ। इसका प्रभाव औद्योगिक नगरों में स्पश्ट दिखाई देता है। प्रवास के कारण मलिन बस्तियों का उद्भव होता है। लोगो को कम कीमत में रहने योग्य आवास मिल जाता है तथा आजीविका के लिए काम। यही कारण है कि नगर मलिन बस्तियों के केंद्र बन गये।

अध्ययन क्षेत्र :

भारत वि व के सबसे विशालतम देशों में से एक है। भारत का अक्षांशीय विस्तार $08^0 04'$ से $37^0 06'$ उत्तर एवं $68^0 07'$ से $97^0 25'$ पूर्वी देशान्तर है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर, उत्तर (जम्मू – कश्मीर) से दक्षिण (कन्याकुमारी) तक भारत की कुल लम्बाई 3,214 किलोमीटर है जबकि पूर्व (अरूणाचल प्रदेश) से पश्चिम (गुजरात) तक भारत की चैड़ाई 2,933 किलोमीटर है। भारत की कुल स्थलीय सीमा 15,200 किलोमीटर है जबकि समुद्री सीमा 7,516 किलोमीटर है। जहां एक तरफ उत्तर में हिमालयी क्षेत्र में अत्याधिक बर्फबारी होती है। वहीं मैदानी इलाकों में तापमान काफी गर्म होता है। जबकि समुद्री इलाकों में तापमान काफी हद तक एक समान रहता है। एक देश के अन्दर इतनी सारी अलग – अलग जलवायु विविधता अपने आप में अदभुत हैं।

अध्ययन के उद्देश्य :–

मलिन बस्तियों के उद्भव में आवास की समस्या प्रमुख है। असंख्य जर्जर मकानों में असंख्य निर्धन व्यक्ति रहने लगे हैं जिनने गंदी बस्ती का रूप धारण कर लिया है। इस तरह नयी गंदी बस्तियाँ स्थापित होती जा रही हैं और पुरानी गंदी बस्तियों के निर्धन इसलिए नहीं छोड़ते हैं क्योंकि इससे सस्ता घर नगर में कहीं उपलब्ध नहीं होता है। एशिया और दक्षिणी अफ्रीका की स्थिति तो यह है कि व्यक्ति गंदी बस्तियों के घर उन चीजों से बनाता है जिसे

लोग कूड़ा – कचरा समझकर फेंक देते हैं। भारत में मलिन बस्तियों की उत्पत्ति का स्थान निर्धारित करना कठिन है। वि व के अन्य दे ाों में युद्ध में नश्ट हुए क्षेत्रों, पर्वतीय क्षेत्रों में मलिन बस्तियां स्थापित हो गयी है। लैटिन अमेरिका में छोटे – छोटे पहाड़ों की ढलानों पर गंदी बस्तियाँ हैं। करॉची में कब्रिस्तान और सड़क के किनारे इन्हें देखा जा सकता है। भारत में भी इसे इस रूप में देखा जा सकता है – अहमदाबाद , कानपुर , नागपुर , कोलकाता , मुम्बई , चेन्नई में एक कमरे की अंधेरी कोठरियों की गंदी बस्तियों की संख्या अधिक है। इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. भारत के शहरों में गंदी/मलिन बस्तियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. भारत में मलिन बस्ती वासियों के पर्यावरण का मुल्यांकन करना।
3. भारत में मलिन बस्ती वासियों की समस्याओं का आकलन करना।

परिकल्पना :–

1. गन्दी/मलिन बस्तियों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ते हैं।
2. भारत में गन्दी/मलिन बस्तियों में रोग अधिक फैलते हैं।
3. सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के साथ गन्दी बस्तियों का प्रसार भी होता है।

अध्ययन स्रोत :–

अध्ययन पद्धति के रूप में द्वितीयक आकड़ों जैसे– पत्र –पत्रिकाओं, समाचार पत्र , सरकारी अभिलेख , मीडिया व टेलीविजन , न्यूज़ चैनल के साक्षात्कार आदि का प्रयोग किया गया है।

भारत मे गन्दी बस्तियों का अध्ययन :–

जहां एक ओर वर्तमान वैज्ञानिक युग में ि ाक्षा के प्रसार ने जनमानस में जागरुकता फैलाई है, वहीं जनसंख्या आधिक्य के कारण बहुत से लोग आज भी उसी नारकीय जीवन में पूरी जिंदगी व्यतीत कर रहे हैं। जहां विभिन्न मूलभूत सुविधाओं की कमी , छोटे–छोटे में 10 से 20 लोगों का रहना, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमीं/पहुंच न होने के कारण विभिन्न बीमारियों से ग्रसित लोगों के मंरझाये चेहरे, कैंसर, टी.बी.,एड्स जैसी भयंकर जानलेवा बीमारियां कब हुई और कब खत्म, पता नहीं चलता। अर्थात् मानव जीवन कीड़े–मकोड़े के जीवन के समान हो जाता है। पंडित जवाहर लाल नेहरु ने कानपुर के अहाता को देखकर एक बार कहा था – " आदमी – आदमी को इस रूप में कैसे देखता है " । वर्तमान दौर में

जनसंख्या बृद्धि दर को देखते हुए मलिन बस्तियों में रहने की समस्या का निराकरण दिखाई नहीं दे रहा है। रहने के लिए घरों में कमरों की संख्या कम, टीन सेड से बनी छतें, घरों का आकार कम, विशाक्त पर्यावरण, निम्न जीवन स्तर व अन्य समस्याओं के चलते भी लोग मलिन बस्तियों में रहने को मजबूर हैं।

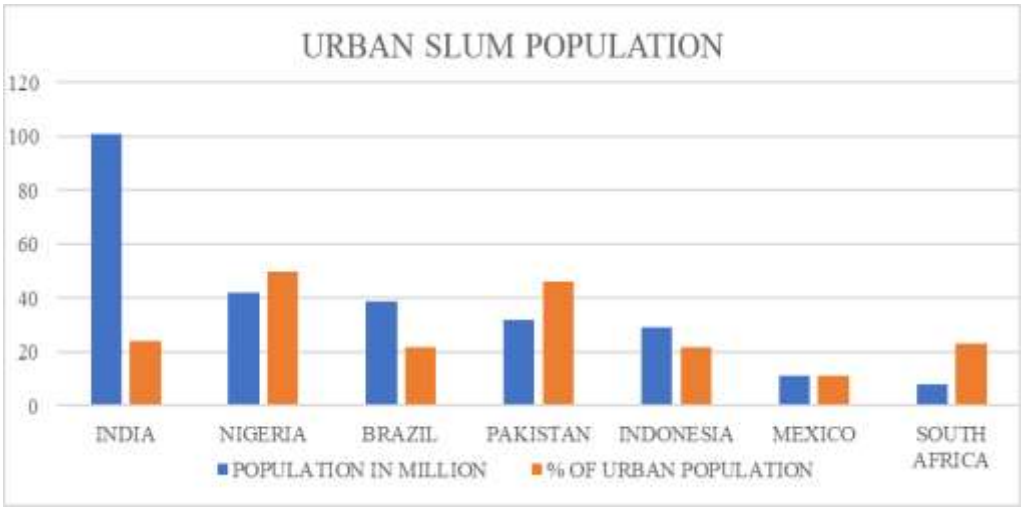

Source- World Bank : Our World in Data

मलिन बस्तियों का सीधा सम्बन्ध बढ़ती जनसंख्या और उनके रहने हेतु आवास की कमी से है, जो आने वाले समय में और गंभीर होती जा रही है।

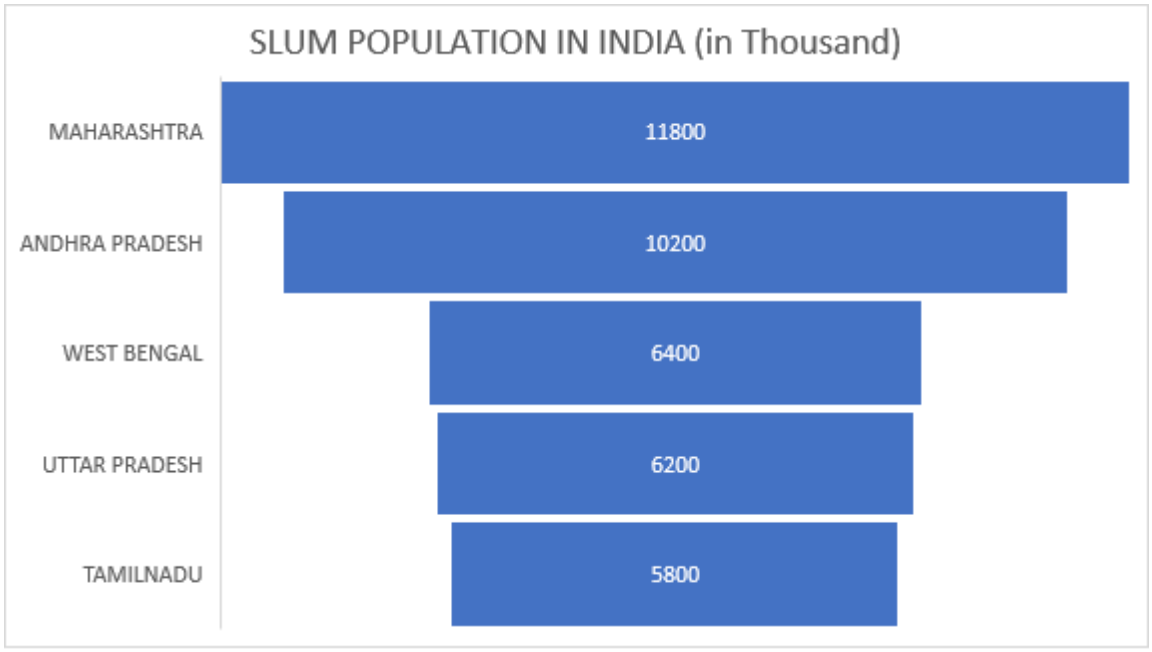

मलिन बस्ती का अर्थ सामान्यतः उन आवासीय प्रतिरुपों से है जहां निवास करने वाला व्यक्ति हर समय कठिनाई भरा जीवन (रहने की निकृश्ट व्यवस्था, अनेक सामाजिक बुराईयां, अ ुद्ध पर्यावरण आदि) जीता है। प्रत्येक दे ा में वहां की आर्थिक स्थिति मलिन बस्तियों की स्थिति को निर्धरित करती है। आर्थिक रुप से विपन्न जनमानस कच्चे मकानों, टीन ोड युक्त व खपरैल युक्त मकान, छोटे–छोटे कमरों से युक्त मकान व अ ुद्ध/विशाक्त पर्यावरण में रहने को बाध्य है। कई दे ाों जैसे – फिलीपाइन्स, लैटिन अमेंरिकी दे ा व पाकिस्तान में लोग दलदली क्षेत्रों, पहाड़ी ढलानों कब्रिस्तानों, सड़क के किनारे, गुफाओं में रहते हैं, वहीं भारत में कई भाहरों जैसे – अहमदाबाद, कानपुर, मुम्बई, चेन्नई और कोलकाता में एक कमरे के

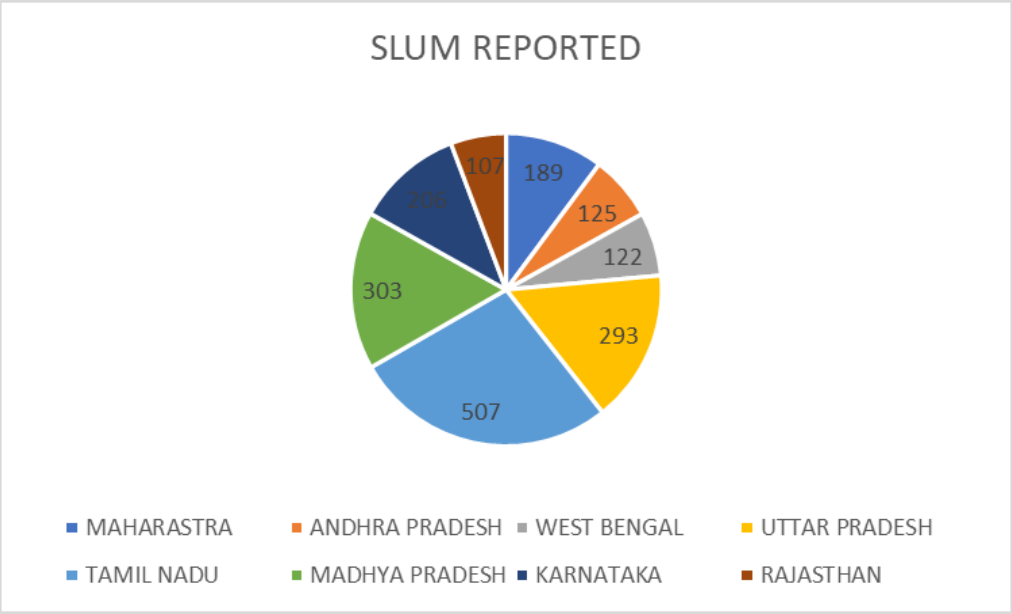

मकानों में रहते हैं। प्रत्येक दे ा में मलिन बस्तियों का प्रतिरुप अलग–अलग देखने को मिलता है। मलिन बस्तियों में निर्धन बेरोजगारों लोगों का आवास होता है। औद्योगिक क्रांति के उपरान्त उद्योगों का तो विकास हुआ है किन्तु कामगारों के आवासों की व्यवस्था नहीं की गयी, जिससे कामगार मलिन बस्तियों में रहने को मजबूर हुए।

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

भारत में गंदी बस्तियों की समस्याएं पाश्चात्य देशों की बस्तियों की समस्याओं से भिन्न हैं। यहां गंदी बस्ती का अर्थ गन्दगी और बीमारी से बसर कर रहे छोटे – छोटे , टूटे – फूटे मकानों में रह रहे लाखों लोगों से है , जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन कर रहे हैं। अंग्रेजी में इसे ' मारनल पोपुलेशन ' कह सकते हैं। जो भी हो इन सब गंदी बस्तियों की जीवन प्रणाली अलग ही है। इन बस्तियों में निवास कर रहे लोग अलग हैं तथा इन लोगों का दृष्टिकोण और इनकी सामाजिक व्यवस्था समाजशास्त्रियों के अध्ययन के लिए रूचि कर विषय है।

गंदी बस्ती का विकास शहर के विकास के साथ जुड़ा हुआ है और इसके साथ तरह – तरह की समस्याएं भी उत्पन्न हुई है। यद्यपि नगरीकरण ने गंदी बस्तियों को जन्म दिया है और इन गंदी बस्तियों ने नई समस्याएं एवं चुनौती पैदा की है। मैक्स वेबर के अनुसार " जब – जब नगर से महानगरों का विकास होता है , तब – तब भ्रष्टाचार के नये – नये रूप भी प्रकाश में आते हैं। "

गंदी बस्ती तथा उनके जैसी सघन मुहल्लों में संख्या भारत के नगरों से दिन – व – दिन बढ़ती जा रही है। 1969 के एक सर्वेक्षण के अनुसार बम्बई में कुल 206 बस्तियाँ थी जिसमें कुल 6,31,000 लोग रहते थे। 1991 के जनगणना के अनुसार पटना शहर की आबादी लगभग 9.18 लाख थी । इनमें से 3.43 लाख आबादी पटना की 68 गंदी बस्तियों में रहती थी। यह शहर की कुल जनसंख्या का 37.3 प्रतिशत था। इन केंद्रों में प्रति वर्ग किलोमीटर जनसंख्या का घनत्व 44–84 था।

वर्तमान आर्थिक स्तर पर भारत कुपोषण की समस्या को कुछ कारगर तथा उपयुक्त योजनाओं के द्वारा 50 प्रतिशत तक खत्म कर सकता है। बच्चों में समुचित पोषण मूल्य को सुनिश्चित करने के काम में महिलाएं ही महत्वपूर्ण कदम उठा सकती हैं। बच्चों तथा परिवार के पोषण के स्तर में सुधार लाने के लिए महिलाओं को पोषण संबंधी जानकारी अच्छी तरह देनी होगी जिससे वे उन्हें अपनी रोजमर्रा की आदतों में शामिल कर सकें।

मलिन बस्तियों के कारण :– मलिन बस्तियों की उत्पत्ति में अनेक मौलिक तत्वों की भूमिका है, जो निम्नलिखित हैं :–

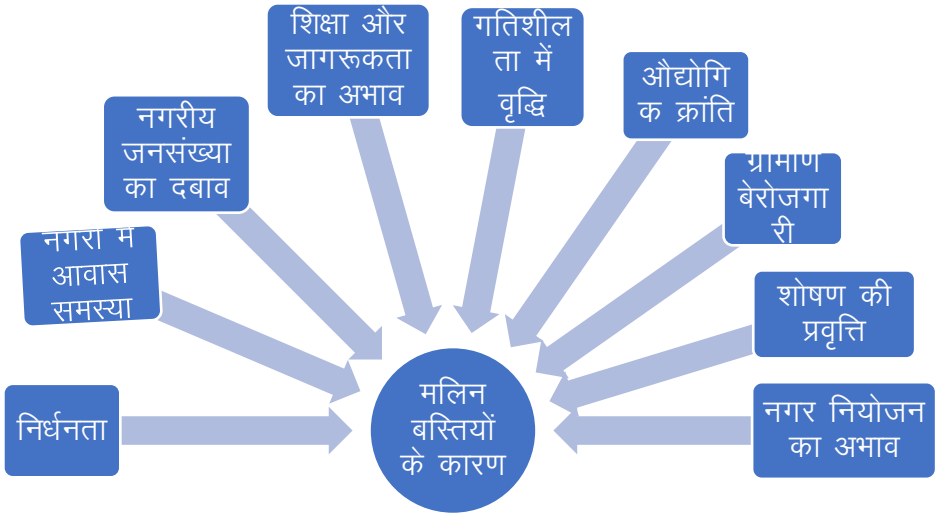

निर्धनता :–

निर्धनता अभिशाप है। गरीब व्यक्ति मेहनत, दैनिक मजदूरी व श्रमिक के रुप में काम करता है फिर भी उसका परिवार दो वक्त के भोजन के लिए तरसता है, जिसके कारण उसका परिवार कुपोशण का ि ाकार हो जाता है। बढ़ती महगाई के साथ – साथ आमदनी में कमीं के चलते ये लोग अपना जीवन अभावों में गुजारने के लिए मजबूर हैं।

नगरों में आवास समस्या :–

नगरों में सीमित भूमि के साथ – साथ भूमि के मूल्य के अधिक होने के कारण सामान्य व्यक्ति भूमि क्रय करके नगर में मकान नहीं बना सकता है। नगर में किराये के मकान भी समान्य व्यक्ति नहीं ले सकता है। लाखों श्रमिकों जिसके साधन और आय सीमित हैं उसे विवश होकर गंदी बस्तियों में रहना पड़ता है। मकान कम है और रहने वाले व्यक्ति कहीं अधिक हैं और परिणामस्वरूप गंदी बस्तियों में निरन्तर वृधि होती जा रही है। स्थानाभाव के चलते संक्रमण तथा रोग व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं। छोटे बच्चे अपने परिवार के साथ तंग जगह में रहते हैं। संक्रमण के चलते बच्चे अनेक बीमारियों जैसे– डायरिया , मीजल्स आदि के ि ाकार हो जाते है और शरीर निर्बल होकर कुपोषण की स्थिति में चला जाता है।

नगरीय जनसंख्या का दबाव :

नगरों में काम की तला ा में ग्रामीण जनसंख्या का प्रवास होता है जिससे नगरों की जनसंख्या बढ़ जाती है। जनसंख्या के बढ़ने से अनेक समस्यायें जैसे – आवास की समस्या, रोजगार की समस्या, भाुद्ध पेयजल की समस्या, भोजन की समस्या आदि बलवती होती हैं।

जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले लोगों का स्वाथ्य गिरता जाता है फलतः वे कुपोषण के शिकार हो जाते हैं , जिसका प्रभाव उनके बच्चों पर पड़ता है।

औद्योगिक क्रांति :

औद्योगिक क्रांति को मलिन बस्तियों का जनक माना जाता है। औद्योगिक नगरों में मुख्य व्यापारिक क्षेत्र और आवासीय क्षेत्र के मध्य मलिन बस्तियों का संकेन्द्रण पाया जाता है। इन बस्तियों में औद्योगिक इकाइयों के कामगार रहते हैं। अधिक धन कमाने की लाल ाा लिए कामगार इन गंदी बस्तियों में आभावों में जीवन जीने को मजबूर होते हैं।

शिक्षा और जागरूकता का अभाव :

मलिन बस्तियों के विकास में ि ाक्षा और जागरुकता की महत्वपूर्ण भूमिका है। वे व्यक्ति, जो निर्धनता के शिकार हैं, वे अनभिज्ञता और सुविधाओं में कमी के चलते इन बस्तियों में रहने को मजबूर है। इन बस्तियों में रहने पर जब तक वो इन बुराइयों को समझ पाते हैं, तब तक खुद बुराइयों से ग्रसित हो जाते हैं। जिसका असर उनकी अगली पीढ़ी में स्पश्ट दिखाई देता है।

गतिशीलता में वृद्धि :

औद्योगिक क्रांति और आवागमन की सुविधाओं ने व्यक्ति को नगरों में काम खोजने और नौकरी करने के लिए उत्प्रेरित किया। नित्य लाखों की संख्या में व्यक्ति एक गांव से एक नगर , एक नगर से दुसरे नगर और नगर से महानगर में काम की तलाश में जाते है। इतने व्यक्तियों के रहने का स्थान कोई भी नगर कैसे बना सकता है। फलस्वरुप वे मलिन बस्तियों के शरण में जाते हैं।

शोषण की प्रवृत्ति :

पूंजीवाद के युग में निजी क्षेत्र को बढ़ावा दिया जाता है। इस व्यवस्था में श्रमिकों से अधिक काम लिया जाता है जबकि उसके बदले उन्हें वेतन कम दिया जाता है। कम आमदनी के चलते श्रमिक अपने परिवार को पालने के लिए भूखे पेट काम करता है और आभावों/कम संविधाओं में जीवन जीता है। इसके चलते वह मलिन बस्तियों में रहने को मजबूर होता है।

सुरक्षा की भावना :–

गाँव छोड़कर ग्रामीण इसलिए भी नगर आ रहा है क्योंकि वहां सुरक्षा नाम की कोई चीज नहीं है। चोरी और डकैती सामान्य बात है। डकैतों का बढ़ता हुआ आतंक ग्रामीणों को गाँव छोड़ने के लिए मजबूर करता है। भाहरों में सुरक्षा की व्यवस्था के लिए पुलिस है जो निरन्तर लोगों, उनके सामान की सुरक्षा के लिए तत्पर है। इस कारण से भी नगरीय जनसंख्या बढ़ रही हैं। जिससे मलिन बस्तियों के विस्तार को बल मिल रहा है।

बेरोजगारी :–

भारत में पहले ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को कुछ ही महीने काम मिलता था और शेष माह वह बेरोजगारी के अभिशाप को भोगता है। ग्रामीण क्षेत्र में इस प्रकार की व्यवस्था नहीं है कि व्यक्ति को खाली समय में काम मिल सके । इसलिए खेती के समय जो ग्रामीण व्यक्ति गाँव में उपलब्ध रहता है उसके पश्चात वह नगरों में काम करने आ जाता है। इनमें से अधिकांश व्यक्ति रिक्शाचालक , ठेले खींचने वाले , खोमचा लगाने वाले या मिल में श्रमिक होते हैं अथवा कोई छोटा – मोटा कार्य करके अपनी जीविका अर्जित करते हैं। उनमें से अधिकांश व्यक्ति गंदी बस्तियों में रहते हैं। यह उनकी विवशता भी है।

नगर नियोजन का अभाव :

नगर में गंदी बस्तियों का यदि विकास हो रहा है तो इसका बहुत कुछ उत्तरदायित्व नगरपालिका और सरकार पर है। यदि नगर का विकास सुनियोजित और योजनाबद्ध ढंग से किया जाए तो गंदी बस्तियों का विकास शायद इस रूप में संभव न हो पता और ये नगर और मानवता के कलंक न बन सकते।

गन्दी बस्तियों की समस्याओं के समाधान की योजनाएं :

गंदी बस्तियां अवांछित होते हुए भी नगरीय क्षेत्र के प्रमुख अंग बन गए है। गंदी बस्तियों के तीव्र प्रसार के कारण नगरों के नियोजित विकास में बाधा पंहुचती है। गरीबी गंदी बस्तियों की सार्वभौमिक विशेषता होती है। नगरों में रोजगार की उपलब्धता के कारण ग्रामीण प्रवास को प्रोत्साहन मिलता है। निम्न आर्थिक स्थिति के कारण प्रवासितो द्वारा नगर के रिक्त सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा कर आवास निर्मित कर लिए जाते है और गंदी बस्तियों का प्रसार होने लगता है। इस प्रवृत्ति ने गंदी बस्तियों को प्रोत्साहन दिया है। यह बस्तियां भौतिक दृष्टि से नगर को आवासीय बना देती है। सम्मानजनक जीवनयापन सुविधा के अभाव में

जनसंख्या का बढ़ता हुआ संकेन्द्रण सामाजिक व नैतिक मोर्चे पर भी अमानवीय परिस्थितियों को जन्म देता है। गंदी बस्तियां केवल नगरों के लिए ही गंभीर नहीं है , वरन राष्ट्र के सर्वागीण विकास में भी बाधक है। अतः इस समस्या को हल करने के लिए व्यवस्थित नियोजन की आवश्यकता है , जिससे गंदी बस्तियों के समस्याओं का उचित निदान के साथ ही भविष्य में इनके वृद्वि को नियंत्रित किया जा सके। इस क्षेत्र में केन्द्र सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं संचालित की गई हैं। प्रमुख योजनायें निम्न प्रकार से है। :–

केन्द्र सरकार की योजनायें :

केन्द्र सरकार के द्वारा पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से देष के विकास एवं उन्नयन के लिए विभिन्न योजनायें संचालित की जा रही है। इन योजनाओं में आवास एवं गंदी बस्तियों की समस्याओं को हल करने के लिए अनेक प्रयास किए गए है।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में गंदी बस्तियों के सुधार के लिए विषेष प्रयास किए गए है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में (1956) में " Slum Clearance And Improvement Scheme " का निर्माण किया गया , जिसके अंतर्गत 350 रू . मासिक आय से कम आय वाले परिवारों के लिए स्वच्छ क्षेत्रों में आवास की व्यवस्था का प्रावधान था। इस योजनाकाल में गंदी बस्तियों के पर्यावरण सुधार के साथ ही वहां निवासरत अतिनिम्न आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के लिए आवास निर्मित किए गए , जिसके अंतर्गत लगभग 80.3 करोड़ रूप्ये खर्च किए गए। 1969 में केन्द्र सरकार की यह योजना राज्य सरकारों को सौंप दी गई है। वर्ष 1972 से दिल्ली सहित देश के 10 वृहत नगरों के पर्यावरण सुधार के लिए योजना प्रारंभ की गई। इस योजना के अंतर्गत जलपूर्ति की सुविधा , जल निकास व्यवस्था , सामुदायिक शौचालय एवं स्नानगृह निर्माण , सड़क का निर्माण , मरम्मत एवं विद्युतीकरण का कार्य किया गया। पांचवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत 3 लाख से अधिक जनसँख्या वाले नगरों तथा छठीं योजना में 1 लाख से अधिक जनसँख्या वाले नगरों को भी इस योजना में सम्मिलित किया गया। छठवीं पंचवर्षीय योजना में इस क्षेत्र में 151.45 करोड़ रूपये खर्च करने का प्रावधान किया गया। विश्व बैंक से भी गंदी बस्तियों के पर्यावरण सुधार के लिए अनुदान प्रदान किया जाता है। वर्ष 1960 में झुग्गी हटाने की योजना लागू की गई , जिसके अंतर्गत शासकीय भूमि पर अवैध कब्जों को हटाकर अन्यत्र बसाने की योजना थी। यह योजना केवल दिल्ली नगर के लिए ही थी। सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985–90) में आवास योजनाओं पर 2458.

27 करोड़ रूपये खर्च करने का प्रावधान किया गया। सांतवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत ही 1989 में शहरी निर्धन बेरोजगारों के लिए नेहरू रोजगार योजना लागू की गई है। आठवीं पंचवर्षीय योजना में नगरीय क्षेत्रों में निर्धनता के लिए बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए Urban Basic Services For The Poor (UBSP) योजना लागू की गई है। केन्द्र सरकार के द्वारा इस योजना के लिए 8090 लाख रूपये राशि व्यय करने का प्रावधान है। नवमीं पंचवर्षीय योजना में " Envornment Improvement In Urban Slums (EIUS)" योजना को उक्त प्राथमिकता दी गई है। प्रारंभिक योजनाओं में केन्द्र सरकार की एकीकृत योजनाएं गंदी बस्तियों के सुविधाओं एवं पर्यावरण सुधार के लिए लागू की गई है। 12वीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत अखिल भारतीय स्तर पर ग्रामीण क्षेत्रों में 672.8 रुपये प्रतिमाह व शहरी क्षेत्रों में 859.6 रुपये प्रतिमाह के उपभोग व्यय को निर्धारित किया गया है।

निष्कर्ष :

अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गरीबी की संस्कृति में पल रहे गंदी बस्ती वासी हालांकि कुछ माने में अपनी अज्ञानता , गरीबी या शिक्षा के आभाव में पोषाहार से सम्बंधित बहुत सी छोटी मोटी बातों की जानकारी नहीं रखते जिसके फलस्वरूप आगे चल कर उन्हें कुपोषण के दुष्परिणाम झेलने पड़ते हैं। फिर भी यह निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि कुछ हद तक हमारे सामाजिक मूल्य और परम्पराएँ इन्हे कुछ ऐसा करने को बाध्य करते हैं जिसके कारण ये बहुत हद तक अपने बच्चों को एक स्वस्थ जीवन देने को मजबूर होते हैं । परन्तु उनकी आर्थिक स्थिति की अपनी सीमाएं उन्हें ऐसा करने को मजबूर करती है और चूँकि उनके अपने समाज में यही कमी सभी परिवारों की होती है जो उनके अपने सामाजिक परिवेश के अनुरूप , सामजिक मूल्यों में बदलाव को प्रभावित करती रहती है और सामाजिक परिवर्तन का यह चक्र गंदी बस्तियों में रहने वाले परिवारों को अपने दायरे से नहीं निकलने देती है।

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

डॉ.सिंह, यू .बी., अधिवास भूगोल , जवाहर पब्लिकेशन–डिस्ट्रीब्यूटर्स , नई दिल्ली।

डॉ.मौर्य, एस. डी ., अधिवास भूगोल , शारदा पुस्तक भवन , इलाहाबाद ,उत्तरप्रदेश।

डॉ.बंसल, सुरेश चन्द्र, नगरीय भूगोल ,मीनाक्षी पब्लिकेशन ,नई दिल्ली।

डॉ.सिंह, ओ.पी., नगरीय भूगोल ,शारदा पुस्तक भवन , इलाहाबाद , उत्तरप्रदेश।

सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी, रविन्द्रनाथ मुखर्जी 2000।

प्रतियोगिता दर्पण पत्रिका नवम्बर 2013।

दुबे संजय, गंदी बस्तियों की समस्याएं , 2007, विकास प्रकाशन , नई दिल्ली ।

Cite Your Article As:
Dr. Raman Prakash. (2023). BHARAT MAIN MALIN BASTIYO KA BAUGOLIK VISLESHAN. Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,, 11(58), 442–453. https://doi.org/10.5281/zenodo.8245663

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language